

वीर नम द्द णुजरात व व ,सुस्त  
तीबष बी.ए.  
हं  
सेमे टरु  
Parishist-2

(2012-2013 एवम् 2013-2014 के शै क वष के लिए

प5 छायावाद क वतामु खौर गौण) Core Course-05

तावन छायावाद हंदके आधुनिक काल क क वताम् एक नूतन और मौलिक उपल है। इसम क वयने अपनी वानुभूतिक अभि य क है। ेम कृतिऔर अ या ह्सके मु य वषयरहे ह । शैली इसक नवीन है। साद्रपंत, महादेवी वमा और निराला इसके मील- तंभह छायावाद के बनहम इस शता दक धड़कन को समझने म असमथ ह गे। भतः इसका अ ययन्मनन बहुत ह ।संगिकवम् अनिवाय है।

पा यपु त्क छायावादः तिनिधि चनाएँ- संपादक : नीरा परमार  
( काशकजयभारती काशन्नइलाहाबाद)

अ ययन्के लिए निधा रत -

- ईकाई-1 जयशंकर स्म क नि नलि खल्ल वताएँ  
ना वक इस सूने तट पर  
इतना न चम कृतहो बाले  
शेरसिंह का श समप ण  
पेशोला क ति वनि
- ईकाई-2 सूय कांत खानिराला क नि नलि खल्ल वताएँ  
जुह क कली  
जागो फरक बार  
नेहनिझ खह गया है  
सरोज- मृति
- ईकाई-3 सुमि नंदनंत क नि नलि खल्ल वताएँ  
मानव  
ताज  
बादल  
तुत झरो
- ईकाई-4 महादेवी वमा क नि नलि खल्ल वताएँ  
यपूजन यभच ने  
मधुर मधुर मेरे द पक्जल

म नीर भर दुःख क बदली  
वरुका जलजात जीवन।

अंक- वभाज्ज-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पष्ठी (चार वक म् से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत्क वताओंसे सं (दस वक म् से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत्क वताओंसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक खेने ह गे) (14×1 14

अंक)

संदभ-पु तक

1. छायावाद-डॉ. नामवर सिंह (राजकमल काशन .लि.नई द ऋी
2. सादका का खों. मशंकर
3. निराला-डॉ. राम वलासामा (राधाकृ ण काशन नई द ऋी
4. जयशंकर सादआ. नंददुलारे वाजपेयी
5. सुमि नंदनंत-आनंद काशद त
6. मह यसीमहादेवी-गंगा सादमा डेयलोकभारती काशन इलाहाबाद)
7. महादेवी-इ नामदान (राधाकृ ण काशन नई द ऋी

अथवा

प5 छायावादो र हंदका यमु खौर गौण) Core Course-05

तावनभाधुनिक हंदका यनवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचा रकगतिशीलता लेकर अवत रत हुआ। उ नीसर्वशती के उ रा म इसम नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन वचासभि य हुए ह । इसक व वधाराएँ ह इसलिये संवेदना तथा न तिके व तके लिये इसका अ ययनअ यंत आव यक्तथा असंकि है।

पा यपु तकायावादो र हंदक वता संपा.डॉ.मृदुला पार क्कसमुख बारोट  
( काशक ुमिल काशन अहमदाबाद)

अ ययनके लिये निधा रत -

ईकाई-1 ह रवंशराख चन्क नि नलि खक वताएँ  
मधुशाला  
लहर का निमं ण  
अँधेरे का द पक  
जो बीत गई सो बात गई

ईकाई-2 दनकक नि नलि खक वताएँ  
हमालय  
द ली  
समर शेष है

ईकाई-3 नागाजु न्क नि नलि खल्ल वताएँ  
 सिंदूर तिल कत्भाल  
 तप ण  
 बसंत क अगवानी  
 त्का बयान

ईकाई-4 भवानी सार्वमि क नि नलि खल्ल वताएँ  
 काल का प हया  
 स नाटा  
 सतपुडा के जंगल  
 याद कसकक ?

#### अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पष्की (चार वक म् से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत्क वताओंसे सं (दस वक म् से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत्क वताओंसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक घेने ह गे)(14×1 14

अंक)

#### संदभ-पु तक

1. नयी क वतके तिमान्ल मीकांत्यमा
2. ह रवंशराख चन्क सा ह स्नाधना-पु पभारती (वाणी काशन्नई द श्री
3. आज के लोक य क क्क चन्संपा.चं गु व लंकराजपाल ए ड्स ज्ञ द श्री
4. ब चन: य औबकृति ब द ली काशन्स मागुजोशी काशजीवन-
5. नई क वत्तहॉ. देवराज (वाणी काशन्न द श्री
6. नागाजु न्क क वत्तअजय तिवार
7. आज के लोक य हंदक व दनकसंपा.म मथनाथु (राजपाल ए ड

स ज्ञ द श्री

8. भवानीमि का का य संवेदना और शि प्संतोषकुमार तिवार (भारतीय थ  
 निकेतन,

नई द श्री

9. हंदक गतिवादक वत्तहॉ. मृ युंजयउपा यायअमर काशमथुरा

+++++

प-6 हंदउप यासमु यऔर गौण) Elective Course-03

तावना हंदग वधाओँउप याससबसे अधिक वकसित्व लोक है। आज तो उसने शा का पधारण कर लिया है। अतः इस वधका गहन अ ययन्भनिवाय है।

पा यपु त्वङ्गलानट-मै `यीपु पा(राजकमल काश .लि.नई द ऋी

अ ययन्के लिए निधा रते-

- ईकाई-1 मै `यीपु पासा ह यक्क रचय  
 'ङ्गलानट': कथानक का मू यांकन  
 'ङ्गलानट': एक समसामयिक उप यासके प्म
- ईकाई-2 'ङ्गलानट' के मु य्या -बाल कशन्नशीलो, अ मत्तथा सुमेर।
- ईकाई-3 'ङ्गलानट' के गौण पा -कांता एवम् स के अ मा  
 'ङ्गलानट' के संवाद  
 'ङ्गलानट': वातावरण -योजना
- ईकाई-4 'ङ्गलानट' क भाषा-शैली  
 'ङ्गलानट' का उ ` य  
 'ङ्गलानट': शीष क्योजना।

अंक- वभाजन

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पष्ठी (चार वक म्म से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत्तप याससे सं (दस वक म्म से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत्तउप याससे 14 वैक पक (हरेक के चार वक छेने ह गे) (14×1 14

अंक)

संदभ-पु तक

1. हंदउप यासका इतिहास-डॉ.गोपाल राय
- 2.मै `यीपु पऔर उनका ङ्गलानट-डॉ.उ म्मटेल (शांति काष्म, रोहतक)

+++++

अथवा

प6 हंदउप यासमु यऔर गौण) Elective Course-03

तावना हंदग वधाओँउप याससबसे अधिक वकसित्व लोक है। आज तो उसने शा का पधारण कर लिया है। अतः इस वधका गहन अ ययन्भनिवाय है।

पा यपु त्वङ्गनारो-मंजूल भगत

(राजकमल काशन .लि.नई द ऋी

### अ ययन्के लिए निधा रते-

- ईकाई-1 मंजुल भगत का सा ह यक्क रचय  
‘अनारो’ का कथानक-मू यक्कन  
‘अनारो’ म अभि य नार वादचिंतन।
- ईकाई-2 ‘अनारो’ के पा ।
- ईकाई-3 ‘अनारो’ उप यास्क संवाद-योजना  
‘अनारो’ म वातावरण-योजना।
- ईकाई-4 ‘अनारो’ क भाषा-शैली  
‘अनारो’ का उ े य  
‘अनारो’ शीष वक्क साथ कता

### अंक- वभाजन

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से ट पष्की (चार वक म्म से दो) (7×2 14 अंक)  
प ठठप यास्से सं (दस वक म्म से पाँच) (5×2 10 अंक)  
प ठठप यास्से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देने ह गो)  
(14×1 14 अंक)

- संदभ-पु तक 1. आधुनिक हंदउप यास्संपा.भी म्साहनी, रामजी मि , भगवती साद  
निदा रय(राजकमल काशन्नई द भी  
2. हंदउप यक्क के सौ वष-डॉ.रामदरश मि (गिरनार काशन्नमेहसाणा)  
3. हंदउप यास्का इतिहास-डॉ.गोपाल राय  
+++++

### प7 हंदसा ह का इतिहास (मु अ Core Course-07

तावनभाठवीं-नवीं शता दसे लेकर आज तक के हंदके वकासप र केयसाथ उसक सज ना मकत्के व वध प वृ और भाषा-शैलिय का न हंदसा ह के इतिहास के राह दयाजा सकता है। अतः हंदसा ह के इतिहास का अ ययन्सव थयो ययवम् आव यवहै।

### अ ययन्के लिए निधा रते-

- ईकाई-1 1. सा ह के इतिहास म काल- वभाजन्भौर नामकरण क सम या।  
2. आ दकाल्क मुख वृ याँ।  
3. आ दकालीन्म र थतियाँ
- ईकाई-2 1. भ काळ मु य वृ याँ।  
2. भ काळ मु यधाराँ  
3. प वत्तरामच रत्मानस तथा सूरसागर का प रचय।
- ईकाई-3. 1. र तिकालश द्रनामकरण, धाराँ  
2. र तिकाल्क मुख वशेषताँ।  
3. केशवदास, देव, बहार, घनानंद, आलम तथा भूषण का सा ह कय्य रचय।

**अंक- वभाजन**

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)  
 ईकाई 3 से ट पष्ठी (चार वक म्म से दो) (7×2 14 अंक)  
 सभी ईकाईय से सं (दस वक म्म से पाँच) (5×2 10 अंक)  
 सभी ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देखे ह गे)  
 (14×1 14 अंक)

- संदभ-पु तक**
1. हं सा ह का इतिहास- डॉ.नगे
  2. हं सा ह का इतिहास-डॉ.ल मीसागखा णेय
  3. हं सा ह का आ दकाल्हजार साद वेद
  4. हं सा ह का अतीत-१-२ - व नाश्माद मि
  5. हं सा ह का इतिहास-रामचं शु ल
  6. हं सा ह का दूसरा इतिहास-डॉ.ब चन्सिह
  7. हं सा ह का वै निक्कइतिहास-१-२ -डॉ.गणपतिचं गु
  - 8.आ दकाल्ह भूमिका-पु षो म साद
  9. हं सा ह क वृ -ऑँजय कशन सादख डेवाल

+++++

**HINDI**  
**B.A. DEGREE COURSE**  
**3<sup>rd</sup> SEMESTER**

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -5 छायावाद क वता Core Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER- 5 छायावादो र हंदका य Core Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER -6 हंदउप यास Elective Course-3	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER -6 हंदउप यास Elective Course-3	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER- 7 हंदसा ह का इतिहास Core Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
6	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

**Model of Time-Table**

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=06				Each Day 4 <sup>th</sup> Hour can be used for Library work//presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नम द्ध णुजरात व व ,सुस  
तीबष बी.ए.  
हं  
सेमे टस  
Parishist-2

(2012-2013 एवम् 2013-2014 के शै क वष के लिए

प8 हंदका यमु खौर गौण) Core Course-07

तावन्माधुनिक हंदका खवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचा रकगतिशीलता लेकर अवत रत हुआ। उ नीसर्वशेती के उ रा म इसम नवीन संवेदनाएँ ह हुए अभि य वचासवीन तथा भावनाएँ, अ यंतअ ययन्हसका लिए के व तके तिज न्तथा संवेदना इसलिए ह धाराएँ व वसक है। असंगिक्तथा आव यक

पा यु तक 1. प रताफे पाँच ष कशोस्काबरा

( मृति काशन 124, शहरारबाग, इलाहाबाद-3)

अ ययन्के लिए निधा रत -

- ईकाई-1 कशोस्काबरा य औद्यकृति व  
ख डका ऋः रभाषएवम् ल ण  
'प रताफे पाँच णः कथाव तु
- ईकाई-2 'प रताफे पाँच णः का य व प  
'प रताफे पाँच णके पा ।-अ बभी म  
'प रताफे पाँच णम मनोवै णिकता
- ईकाई-3 'प रताफे पाँच णम संवाद-योजना  
'प रताफे पाँच णशीष वक्र साथ कता
- ईकाई-4 'प रताफे पाँच णका यका उ ` य  
'प रताफे पाँच णका कला-प ।

अंक- वभाजन

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से ट पष्ठी (चार वक म्म से दो) (7×2 14 अंक)  
प ठत्का यसे सं (दस वक म्म से पाँच) (5×2 10 अंक)  
प ठका यसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक देने ह गे) (14×1 14 अंक)

## संदभ-पु तक

- 1.ता ीलोक- कशोस्काबरा वशेषांक
2. हदके खंडका यम युग-बोध-डॉ.राज भाराज
3. हदसा ह म पक्कथा-का यड वरौर वकास्को.नूरजहाँ बेगम
4. हदके वातं यो मिथक यख डका -डॉ.क वतरामा  
(पा प लकेशन्महमदाबाद)
- 5.न य बंधका यम आधुनिक-बोध-उव शीरामा
- 6.नयी क वतक्र बंधचेतना-डॉ.महावीरसिंह चौहान
- 7.आधुनिक बंधका यःसंवेदनके धरातल-संपा.डॉ. वनोदोदरे
8. हं के े का यका मू यांकन्संपा.डॉ.यश गुलाट
- 9.प रताफे पाँच णःएकअनुशीलन-डॉ. बमलेशेवतिया

+++++

## अथवा

### प8 हंदका यमु रौर गौण) Core Course-07

तावन्आधुनिक हंदका यनवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारकगतिशीलता लेकर अवतरत हुआ। उनीसवींशती के उराम इसम नवीन संवेदना भावनाएँ तथा नवीन वचारअभिय हुए ह। इसक व वधाराएँ ह इसलिए संवेदना तथा नान तिक्के व तक्के लिए इसका अययनअ यंत आव यक्तथा सांगिकहै।

### पा यपु क्क 1. अँधा युग-धम वीरारती

(राजकमल काशन .लि. नई द णी)

### अ ययनके लिए निधा रते-

- ईकाई-1 धम वीरारती: य औबकृति व  
'अँधा युग' का का य व प  
'अँधा युग': कथाव तु
- ईकाई-2 'अँधा युग' म आधुनिकता-मिथक  
'अँधा युग' के मु या
- ईकाई-3 'अँधा युग' म संवाद-योजना  
'अँधा युग' म कृति-चि ण।  
'अँधा युग' के गौण पा
- ईकाई-4 'अँधा युग' शीष क्क साथ कता  
'अँधा युग' का य्का उ े य  
'अँधा युग' का कला-प ।

**अंक- वभाजन**

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पष्ठी (चार वक म् से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत्का य्से सं (दस वक म् से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत्का य्से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देमे ह गो) (14×1 14 अंक)

**संदभ-पु तक**

1.धमवीर भारती क सा ह स्नाधना-संपा.पु पभारती

2.धम वीभारती से सा ा कसंपा.पु पभारती

3. हदके खंडका यम युग-बोध-डॉ.राज भार ाज

4.न य बंधका यम आधुनिक-बोध-उव शिशमा

5.नयी क वतफ्र बंधचेतना-डॉ.महावीरसिंह चौहान

6.आधुनिक षं-का यःसंवेदनफ्रे धरातल-संपा.डॉ. वनोदोदरे

7. हंदके े का यका मू यांकनसंपा.डॉ.यश गुलाट

8. वातं यो हंदसा ह षॉ.बेचैन

9.धम वीभारती: अनुभव और अभि य -ल मणद गौड़ (भारत पु तकभंडार, द ङ्गी

+++++

**प9 हंदनाटक (मु षौर गौण) Elective Course-04**

तावना हंदग वधाओंम नाटक सबसे अधिक वकसित वधहै। आज तो उसने रंगमंच से जुड़कर मह वपूण पधारण कर लिया है। अतः इस वधका गहन अ ययनअनिवाय है।

**पा यपु क्क 1. ' व वामिनीनयशंकर साद**

(राजकमल काशन .लि. नई द ङ्गी

अ ययनके लिए निधा रत -

ईकाई-1 जयशंकर साद एक नाटककार के फ्र

‘ व वामिनी कथानक

‘ व वामिनी इतिहास और क पना

‘ व वामिनी चि सम या

ईकाई-2 ‘ व वामिनी पा -

वृ वामिनीचं गु, रामगु , कोमा, शकराज,

आचाय मि हरदेव और शिखर वामी

ईकाई-3 ‘ व वामिनी संवाद

‘ व वामिनी वातावरण-योजना

‘ व वामिनी भाषा-शैली

ईकाई-4 ‘ व वामिनी उ े य

‘ व वामिनी शीष क्क साथ कता

‘ व वामिनी गीत-योजना

**अंक- वभाजन**

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पष्ठी (चार वक म् से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत्नाटक से सं (दस वक म् से पाँच) (5×2 10 अंक)

प छ नाटक से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देखे ह गे) (14×1 14 अंक)

**संदभ-पु तक**

- 1.नाटककार जयशंकर सादसंपा.स ये कुम्भसेजा (राधाकृ ण काशन्नई द श्री
2. सादके नाटक- व और संरचना-डॉ.गो वद्व्यातक(सा ह आरती, द श्री
3. हंदनाटक: उ खौर वकास्रॉ.दशरथ ओझा (राजपाल ए डस ज़ द श्री
4. हंदनाटक-डॉ.ब चनसिंहलोकभारती काशन्नइलाहाबाद)
- 5.जयशंकर साद:रंग भाग-1-2 -महेश आनंद (रा ीयना य व लसई द श्री

**अथवा****प१ हंदएकांक (मु खौर गौण) Elective Course-04**

सावना हंदग वधाओम एकांक सबसे अधिक वकसितव लोक है। आज तो उसने शा का पधारण कर लिया है। अतः इस वधका गहन अ ययन्धनिवाय है।

पा यपु तक.स -एकांक संपा.डॉ.बी.के. कलासवा

( काशक्षांति काशद्रोहतक)

अ ययन्के लिए निधा रते-

ईकाई-1 हंदएकांक उ खौर वकास  
एकांक श द्का अथ, प रभाषएवम् त व

ईकाई-2 पृ वीराज्फ्र ऑख-डॉ.रामकुमार वमा  
दो कलाकार-भगवतीचरण वमा

ईकाई-3 ल मीका वागल्लपे नाअ क  
ईकुवने र साद

सीमा-रेखा- व णु बाकर

ईकाई-4 र द्क ह डजगद शचं माथुर  
यहाँ रोना मना है-ममता कालिया

**अंक- वभाजन**

ईकाई 1-2 और 3 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)

ईकाई 3 और 4 से ट पष्ठी (चार वक म् से दो) (7×2 14 अंक)

प ठत्तरकां कयसे सं (दस वक म् से पाँच) (5×2 10 अंक)

प ठत्तरकां कयसे 14 वैक पक (हरेक के चार वक देखे ह गे) (14×1 14 अंक)

**संदभ-पु तक** 1. हं एकांक -सि नाथकुमार (राजकमल काशन्नई द श्री

2.एकांक और एकांक कासामचरण महे

3.सा ह ,अनो व और हदएकांक -गु दयाल्लजज

### पा10 हंदसा ह का इतिहास (मु अ Core Course-08)

तावनवीसवीं शताब्दी के आरंभ से लेकर आज तक के हंदके विकास में के साथ उसका सजना मकतके व वध प वृ और भाषा-शैलियों का इन हंदसा ह के इतिहास के राह दयाजा सकता है। अतः हंदसा ह के इतिहास का अध्ययन आवश्यक था यथा यवम् आव यवहै।

#### अ अध्ययनके लिए निम्नलिखित -

- ईकाई-1 आधुनिक काल के आविष्कारों के कारण  
भारते युगीन और वेद युग के अन्तर्गत मुख्य विशेषताएँ।  
मैथिलीशरण गुप्त, साद्वपंत, महादेवी, निराला का साहित्यिक रचय।
- ईकाई-2 छायावाद, गतिवाद तथा योगवाद के अन्तर्गत मुख्य विशेषताएँ।  
दनकरब, चंद्रशिवमंगल सिंह, सुमन तथा अशोक साहित्यिक रचय।
- ईकाई-3 उपन्यास तथा कहानी, उच्च और विकास।
- ईकाई-4 नाटक तथा आलोचना: उच्च और विकास।

#### अंक- वभाजन

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचना मक (16×2 32 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से एक पक्षी (चार वक म से दो) (7×2 14 अंक)  
ईकाई 1 और 2 से सं (दस वक म से पाँच) (5×2 10 अंक)  
सभी ईकाईय से 14 वैक पक (हरेक के चार वक देने ह गे)  
(14×1 14 अंक)

#### संदभ-पु तक

1. हंसा ह का इतिहास-डॉ. नगे
2. हंसा ह का इतिहास-डॉ. ल मीसागखाणेय
3. हंसा ह का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
4. हंसा ह का दूसरा इतिहास-डॉ. बचनसिंह
5. हंसा ह का वैदिक इतिहास-१-२-डॉ. गणपतिचंद्र गु
6. हंसा ह का वृद्धि-डॉ. जय कशन सादख डेलवाल
7. हंसा ह का ग-सा ह-डॉ. साद
8. आधुनिक हंसा ह का इतिहास-डॉ. वजयपालसिंह

**HINDI**  
**B.A. DEGREE COURSE**  
**1<sup>ST</sup> SEMESTER**

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -8 हंदका य Core Course-7	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER- 8 हंदका य Core Course-7	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER -9 हंदउप यास Elective Course-4	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER -9 हं उप यास Elective Course-4	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER- 10 हंदसा ह का इतिहास Core Course-8	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
6	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

**Model of Time-Table**

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=06				Each Day 4 <sup>th</sup> Hour can be used for Library work/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				